डीआरडीओ समाचार

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

डॉ एस क्रिस्टोफर, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के महानिदेशक नियुक्त

डॉ एस क्रिस्टोफर, विशिष्ट वैज्ञानिक, कार्यक्रम निदेशक, वायुवाहित जल्द चेतावनी और नियंत्रण (अवाक्स) प्रणाली तथा निदेशक, वायुवाहित प्रणाली केन्द्र (कैब्स), बैंगलूरू ने रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डी आर डी ओ महानिदेशक का पदभार संभाला। डॉ क्रिस्टोफर को स्वदेशी ए ई डब्ल्यू एंड सी (अवाक्स) प्रणाली का जनक माना जाता है। आपने 1978 में मद्रास विश्वविद्यालय से अपनी अभियांत्रिकी (ससम्मान) स्नातक उपाधि, 1980 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खडगपुर से माइक्रोवेव और रडार अभियांत्रिकी में स्नातकोत्तर तथा 1985 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास से एंटीना तथा मापन तकनीकों में पी एच डी की डिग्री प्राप्त की। आपने 1980 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास में एक शिक्षक के रूप में शुरूआत की और माइक्रोवेव एंटीना अभिकल्पन और समीप क्षेत्र मापन तकनीकों पर अनुसंधान कार्य किया। 1985–1988 के दौरान आपने मैसर्स भारत इलैक्ट्रॉनिक्स, गाजियाबाद में वरिष्ठ अभियंता के रूप में कार्य किया जहाँ आपने डिजिटल ट्रोस्केटर संचार प्रणाली के लिए एंटीना अभिकल्पन किया।

डॉ क्रिस्टोफर डी आर डी ओ में 1988 में इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बैंगलूरू में वैज्ञानिक डी के रूप में शामिल हुए और विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया। एल आर डी ई में आपने स्वचालित प्लेनर समीप क्षेत्र मापीय सुविधा को तैयार करने वाले दल का नेतृत्व किया जिसने इलैक्ट्रॉनिकली स्कैन्ड ऐर्रे एंटीना मूल्यांकन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। एल सी ए–मल्टी मोड रडार के परियोजना निदेशक के रूप में, आपने स्लोटिड ऐर्रे प्रौद्योगिकी का अभिकल्पन और विकास किया जो कि काफी वायुवाहित एवं प्रक्षेपास्त्र परियोजनाओं में उपयोग हो रही है। इस प्रौद्योगिकी को बाद में पोलैंड को निर्यात किया गया। आप वायुवाहित निगरानी प्लेटफार्म परियोजना और भारतीय नौसेना के लिए समुद्री निगरानी वायुवाहित रडार के विकास, पर्यवेक्षण 2000 के लिए भी परियोजना निदेशक रहे।

डॉ क्रिस्टोफर 18 जून 2004 को कैब्स में वैज्ञानिक जी के रूप में शामिल हुए और ए ई डब्लयू एंड सी प्रणाली के कार्यक्रम निदेशक का पदभार संभाला, जब अक्तूबर 2004 में यह कार्य कैब्स को सौंपा गया था। आपने डी आर डी ओ के कार्य केन्द्रों द्वारा

इस अंक में

- डॉ जी सतीश रेड्डी ने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार का पदभार संभाला
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह
- समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर
- विश्लेषण विंग का उद्घाटन
- मनोवैज्ञानिक अनुवीक्षण परीक्षण का विकास
- उत्कृष्ट समीक्षक पुरस्कार
- राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह समारोह
- डॉ बी आर अम्बेडकर जयंती समारोह
- कार्मिक समाचार
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- जैवप्रौद्योगिकी उत्पाद और प्रक्रिया विकास और वाणिज्यीकरण पुरस्कार 2015
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

भारतीय वायुसेना की विशिष्ट परिचालन जरूरतों के लिए एईडब्लयू एंड सी प्रणाली के अभिकल्पन, विकास, निर्माण और योग्यता की जिम्मेदारी ली। स्वदेशी वायुवाहित चेतावनी और नियंत्रण (ए डबल्यू ए सी) प्रणाली का अभिकल्पन और विकास के लिए अवाक्स कार्यक्रम डी आर डी ओ के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक है। अवाक्स प्रणाली को निगरानी क्षेत्र में उपलब्ध खतरों का पता करने, पहचानने और वर्गीकृत करने के लिए अभिकल्पन किया गया है और विभिन्न वायु कार्यवाही को समर्थन के लिए आदेश और नियंत्रण केन्द्र के रूप में कार्य करता है। यह प्रणाली इसके बहुसंचार और डाटा लिंक से इन खतरों के प्रति लडाकू विमानों को चेतावनी और निर्देश प्रदान करती है जबकि जमीनी शोधन स्टेशनों पर समादेशकों को स्पष्ट वायु सतह तस्वीरें प्रदान करती है। यह प्रणाली इलैक्ट्रॉनिक और संचार सहायक उपायों से सुसज्जित है जो विद्वेष पूर्ण रडार प्रसारणों और संचार संकेंतो को रोकती और वर्गीकृत करती है।

01 जनवरी 2007 को डॉ क्रिस्टोफर को अवाक्स के कार्यक्रम निदेशक की जिम्मेदारी के साथ कैब्स का निदेशक नियुक्त किया गया। इन्हें जुलाई 2008 से उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा जुलाई 2012 से विशिष्ट वैज्ञानिक के पद पर पदोन्नत किया गया। डॉ क्रिस्टोफर राष्ट्रीय इंजीनियर्स अकादमी (एफ एन ए ई) और इलैक्ट्रॉनिक्स तथा दूरसंचार इंजीनियर्स संस्थान (आई ई टी ई) के सदस्य हैं। आप एस ई ई और आई ई ई ई के सदस्य हैं। आपको माइक्रोवेव एंटीना और रडार प्रणाली के क्षेत्र में योगदान के लिए जे सी बोस मेडल, डी आर डी ओ का वार्षिक वैज्ञानिक पुरस्कार, डी आर डी ओ प्रौद्योगिकी समूह पुरस्कार, एन आर डी सी पुरस्कार, डॉ वी एम घाटगे पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका हैं।

आपको वायुवाहित एस–बैण्ड प्रेषक–प्राप्ति बहुमॉड्यूल (टी आर एम एम), नौसेना और तटरक्षकों के लिए स्वदेशी समुद्री निगरानी वायुवाहित रडार, पर्यवेक्षण–2000 और भारत और विदेश में रडार के विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए वेवगाइड स्लोटिड ऐर्रे के अभिकल्पन और विकास में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 2008 में आई ई टी ई–आई आर एस आई पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका हैं। आपने अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर 50 से अधिक आलेख प्रकाशित/प्रस्तुत किए हैं।

डॉ जी सतीश रेड्डी ने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार का पदभार संभाला

विशिष्ट वैज्ञानिक एवं नेविगेशन और वैमानिकी प्रौद्योगिकी में प्रख्यात विशेषज्ञ डॉ जी सतीश रेड्डी को रक्षा मंत्री का वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त किया गया हैं। आपके पास हैदराबाद में डी आर डी ओ की प्रक्षेपास्त्र प्रयोगशाला अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई) के निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार भी है। डॉ रेड्डी डी आर डी ओ में 1986 में शामिल हुए और तब से जड़त्वीय सेंसर, नेविगेशन योजनाओं, एल्गोरिथमों और प्रणालियों, कैलिब्रेशन कार्यविधियों, सेंसर मॉडल, उपग्रह नेविगेशन रिसीवर और मिश्रित नेविगेशन प्रणाली के विकास के साथ सिमुलेशन की संकल्पना, अभिकल्पन, विकास और उत्पादनीकरण शामिल हैं। आपके नेतृत्व में भारत के सामरिक कार्यक्रमों हेतु उन्नत उत्पादों और विभिन्न प्रकार के वैमानिकी प्रणालियों का उत्पादन और सफलतापूर्ण उडान परीक्षण किया गया है। प्रयोजन निदेशक के तौर पर आपने रिंग लेजर गायरो आधारित जड़त्वीय नेविगेशन प्रणाली (आई एन एस), एम ई एम एस आधारित आई एन एस प्रणाली, समुद्री–सुरक्षा संदर्भ प्रणाली और जहाज नेविगेशन प्रणाली के अभिकल्पन और विकास में उत्कृष्टता से उच्च सटीकता और लंबी दूरी के नेविगेशन में देश की आत्मनिर्भरता को मजबूत किया हैं। आपने 1000 किलोग्राम वर्ग का निर्देशित बम विकसित करने में सफलता प्राप्त की है।

आपकी दीर्घकालिक विशेषज्ञता ने राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों के लिए आवश्यक मदद प्रदान की है। आर सी आई के निदेशक के रूप में आपने जड़त्वीय प्रणाली, एम्बेडेड कंप्यूटर, नियंत्रण, रियल–टाइम सॉफ्टवेयर और सिमुलेशन, ऊर्जा आपूर्ति, आर पी जी, खोजकर्ता, एंटीना, अग्नि ए1, ए2, ए3,ए4, ए5, पृथ्वी, धनुष, अस्त्र, आकाश, पानी के अन्दर के पक्षेपास्त्र, बह्मोस, निर्भय, हेलिना, नाग, एम आर एस ए एम, ए

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

डी–पी डी वी इंटरसेप्टर, द्वि–चरणीय जहाज से भेदा जाने वाला लक्ष्य, ए ए डी और अन्य रक्षा कार्यक्रमों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वैमानिकी प्रौद्योगिकी के विकास का नेतृत्व किया।

डॉ रेड्डी ने प्रौद्योगिकी विकास की एक संख्या में मिशन मोड और विभिन्न क्षमताओं की कई परियोजनाओं में कई प्रकार की प्रणालियों को प्रदान करने की एस एण्ड टी परियोजनाओ में अग्रणियता हासिल की हैं। इन्होनें माड्यूल (जी3 ओ एम) रिसीवर पर जी पी एस+जी एल ओ एन ए एस एस+जी ए जी एन और चिप पर प्रणाली (एस ओ सी) ने आनबोर्ड वैमानिकी के लघु रूपांतरण में काफी वृद्धि की हैं, टैंक विरोधक अनुप्रयोगों और लम्बी दूरी की बी एम डी अनुप्रयोगो के लिए आई आई आर खोजकर्ता के विकास के साथ–साथ लम्बी दूरी के सटीक नेविगेशन के लिए उच्च सटीकता तीव्रतामापी का विकास किया हैं।

डॉ रेड्डी, जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अनन्तपुर से इलैक्ट्रानिक एवं संचार इंजीनियरंग में स्नातक और जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हैदराबाद से एम एस और पी एच डी की उपाधि प्राप्त की। ये भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी, रायल इंस्टीट्यूट आफ नेविगेशन, लंदन, एयरोनोटिकल सोसायटी आफ इंडिया, रायल एयरोनोटिकल सोसायटी लंदन, इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिग और प्रौद्योगिकी, यूके, सोसायटी आफ सोकवेव रिसर्च, इंस्टीटयूशन आफ इंजीनियर्स (भारत), आंध्र प्रदेश विज्ञान अकादमी, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं दूरसंचार इंजीनियर संस्थान के सदस्य और देश और विदेश के बहुत से व्यावसायिक/वैज्ञानिक निकायों के वरिष्ठ सदस्य हैं।

आपको पूर्ण सदस्य डिप्लोमा से सम्मानित किया और नेविगेशन और गति नियंत्रण अकादमी, रूस में विदेशी सदस्य और यूएसए की अमेरिकन इंस्टीट्यूट आफ एयरोनोटिक्स और एस्ट्रोनोटिक्स के सहायक सद्स्य के रूप में शामिल किया गया। देश में आपके विशिष्ट योगदान के लिए भारतीय कम्प्यूटर सोसायटी ने मानद सदस्यता से सम्मानित किया। आप आटोमैटिक कट्रोल एण्ड डाईनेमिक आपटिमाइजेशन सोसायटी के मानद सदस्य है और आस्ट्रिया के इंटरनेशनल फेडरेशन आफ आटोमैटिक कंट्रोल के राष्ट्रीय सदस्य हैं।

डॉ सतीश रेड्डी को भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन होमी जे भाभा स्मृति पुरस्कार, डी आर डी ओ नौजवान वैज्ञानिक पुरस्कार, डी आर डी ओ का वार्षिक वैज्ञानिक पुरस्कार और आत्मनिर्भरता में उत्कृष्टता के लिए डी आर डी ओ अग्नि पुरस्कार आदि प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं। इन्हें एयरोनोटिकल सोसायटी आफ इडिया का डॉ बिरेन राय अंतरिक्ष विज्ञान एवं डिजाइन पुरस्कार, एस्ट्रोनोटिकल सोसायटी आफ इंडिया रोकेट्री और सम्बन्धित प्रौद्योगिकी पुरस्कार, एफ ए पी सी सी आई उत्कृष्ट इंजीनियरिंग पुरस्कार, आई टी ई बी वी बालिगा मैमोरियल पुरस्कार, सिस्टमस सोसायटी आफ इंडिया विक्रम पुरस्कार और बहुत से अन्य सम्मानों से सम्मानित किया गया हैं। आप कई प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थानों की शासकीय परिषदों/शैक्षणिक समूह के सदस्य है और कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के दौरान सत्र की अध्यक्षता, उद्घाटन और मुख्य सम्बोधन दे चुके हैं।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस (एन टी डी) प्रतिवर्ष 11 मई को 1998 में पोखरण में दूसरी बार किए गए परमाणु विस्फोट की याद में सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है। एन टी डी को वैज्ञानिक जांच, प्रौद्योगिकी रचनात्मकता और विज्ञान, समाज और उद्योग के एकीकरण की खोज के अनुवाद के चिन्ह के रूप में मनाया जाता हैं। निम्नलिखित डी आर डी ओ प्रयोगशालाओ/संस्थानों ने भी प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यान, विशेष व्याख्यान, विज्ञान प्रदर्शनी और अन्य वैज्ञानिक कार्यक्रमों द्वारा एन टी डी का आयोजन किया।

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू

श्री बालकृष्ण प्रकाश, वैज्ञानिक एफ, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यान देते हुए।

श्री बालकृष्ण प्रकाश, वैज्ञानिक एफ, ने यू ए वी के लिए दोष सहनशील उड़ान नियंत्रण प्रणाली की चुनौतियों पर व्याख्यान दिया। श्री पी श्रीकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई) ने वक्ता को एन टी डी व्याख्यान प्रमाण–पत्र और पदक प्रदान किया।

वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बैंगलूरू

श्री एम कार्तिक, वैज्ञानिक डी ने कम वेग प्रभाव के ग्लास फाइबर और ग्लास क्यू ए एम/कार्बन डबल्यू आर एम मिश्रित संयोजन के विभिन्न रूपों के प्रभाव पर एन टी डी व्याख्यान प्रस्तुत किया। इन्हें डॉ एस क्रिस्टोफर, परियोजना निदेशक, अवाक्स प्रणाली तथा निदेशक, कैब्स द्वारा व्याख्यान प्रमाण–पत्र और पदक प्रदान किया गया।

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरू

श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, केयर, श्री फिलिप अब्राहम, वैज्ञानिक एफ को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पदक एवं प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

श्री फिलिप अब्राहम, वैज्ञानिक एफ ने इंटरनेट प्रोटोकॉल संचार की सुरक्षाः मुक्त स्त्रोत से लेकर उच्च आश्वासन तक पर एन टी डी व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने इंटरनेट प्रोटोकोल सुरक्षा (आईपीसेक) प्रोटोकोल के बारे में बताया। यह गेटवे के मध्य सुरक्षित संचार स्थापित करता हैं और सैन्य नेटवर्को के क्षेत्रों को आपस में जोडता है। सैन्य प्रणालियों को बहुत कुशल और संसाधन संपन्न विरोधी के खिलाफ उनके प्रभावशीलता का उच्च आश्वासन देना होता है और इसलिए मुख्याधारा आईपीसेक प्रोटोकोल को अपनाने की आवश्यकता है ताकि संसाधन सम्पन्न विरोधियों से पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जा सके। श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, केयर द्वारा श्री फिलिप को व्याख्यान प्रमाण–पत्र और पदक प्रदान किया गया।

सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बैंगलूरू

डॉ साई कृष्णा राव, वैज्ञानिक डी ने मिश्रित उष्मीय अवरोध परतः इन–सीटू डिपोजिशन तकनीक और ऑक्सीकरण व्यवहार का चरित्रण पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में इन्होंने उष्मीय अवरोध परत (टी बी सी) प्रणाली और इस पर स्वयं द्वारा किया गया प्रयोगात्मक कार्य के बारे में बताया। मिश्रित टी बी सी प्रणाली के आइसोथर्मल ऑक्सीकरण प्रतिरोध का पारंपरिक टी बी सी प्रणाली के साथ–साथ अपरतीय सुपर मिश्रधातु सब्सट्रेट और एकमात्र परत की तुलना को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

रक्षा इलैक्ट्रोनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद

डॉ सी जी बालाजी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एल आर एल, (दांये) श्री एच डी कुलकर्णी, वैज्ञानिक जी को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पदक एवं प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

श्री एच डी कुलकर्णी, वैज्ञानिक जी द्वारा विमान भेदी आई आर प्रक्षेपास्त्र मार्गदर्शकीय प्रौद्योगिकी की प्रगति और इसके प्रतिउपायों पर एन टी डी व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में प्रथम पीढी आई आर प्रक्षेपास्त्र में लगाई गई आई आर मार्गदर्शकीय तकनीकें से लेकर नवीतम प्रक्षेपास्त्र में लगाई गई तकनीकों और आई आर प्रतिउपाय तकनीकों के बारे में भी बताया गया। डॉ सी जी बालाजी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

(डी एल आर एल) ने श्री एच डी कुलकर्णी को एन टी डी व्याख्यान प्रमाण पत्र एवं पदक प्रदान किया।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद

डॉ अमोल ए गोखले, विशिष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, डी एम आर एल, (दांये) डॉ ए के मुखोपाध्याय, उत्कृष्ट वैज्ञानिक को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पदक एवं प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए।

डॉ ए के मुखोपाध्याय, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने प्रक्षेपास्त्र, आयुध, संग्राम इंजीनियरिंग और एयरोस्पेस अनुप्रयोगों हेतु गढे हुए एल्मीनियम मिश्रधातु के औद्योगिक स्तरीय विकास और उत्पादन पर एन टी डी व्याख्यान दिया। डॉ मुखोपाध्याय ने रक्षा अनुप्रयोगों के लिए एल्यूमीनियम मिश्रधातु के स्वदेशीकरण पर कहा कि इससे न केवल देश में प्रौद्योगिक प्रगति होगी अपितु काफी कीमत भी बचेगी। डॉ अमोल ए गोखले, विशिष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, डी एम आर एल ने डॉ ए के मुखोपाध्याय को एन टी डी पदक और प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र, हैदराबाद के निदेशक, डॉ सतीश चन्द्र शिनाय मुख्य अतिथि थे। श्री एस एस रेडडी कुमार, वैज्ञानिक ई, ने एफ ओ जी के लिए बहु–आयामी एकीकृत आप्टिक चिप (एम आई ओ सी) के वास्तविकरण पर एन टी डी व्याख्यान दिया। इस अवसर की याद में आर सी आई विज्ञान समिति ने दो आमंत्रित व्याख्यान पहला राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक डॉ पूर्णचन्द्र राव द्वारा भूकंपों और सुनामी पर और दूसरा आई आई टी दिल्ली के प्रोफेसर एम जगदीश कुमार द्वारा कम ऊर्जीय एकीकृत सर्किट के लिए नैनो स्तरीय

आर सी आई में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उद्घाटन सत्र।

ट्रांसिसटर–नया न्वोन्मेश का संचालन किया गया। डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आर सी आई ने समारोह की अध्यक्षता की।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम

श्री सी डी मालेश्वर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम ने समारोह का उद्घाटन किया। अपने स्वागत संबोधन में श्री मालेश्वर ने उत्तम इंजीनियरिंग अभ्यासों की सहायता से उत्तम प्रौद्योगिकियों के उत्थान की जरूरत बताई। उन्होंने समाज के सशक्तीकरण और देश को गरीबी से मुक्त करने के लिए प्रौद्योगिकी की आवश्यकता पर बल दिया। प्रोफेसर रत्नम वी राजकुमार, निदेशक, आई आई टी भुनेश्वर ने ए यू वी के लिए अंतर्जलीय संचार और डॉ एस एस सुन्दरम, विशिष्ट वैज्ञानिक, पूर्व महानिदेशक (ई सी एस), डी आर डी ओ ने डी आर डी ओ द्वारा भाविष्यिक प्रोद्योगिकियो का विकास पर व्याख्यान दिए। श्री के श्रीकांत, वैज्ञानिक सी ने आयतीय त्रुटियाँ के साथ कोने के परावर्तको के रडार आयतन में कमी के अनुमान पर एन टी डी व्याख्यान दिया। श्री मालेश्वर ने श्री के श्रीकांत को एन टी डी पदक से सम्मानित किया।

श्री सी डी मालेश्वर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एन एस टी एल, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का उद्घाटन उद्बोधन देते हुए।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

नामिकीय औषिध तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, और थापर यूनिवर्सिटी (टी यू), पटियाला ने 28 मई 2015 को शैक्षिक संवाद बढ़ाने और अनुसंधान एवं विकास सहयोग के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता ज्ञापन शुरूआती तौर पर टी यू और इनमास के दो विभागों–जैव प्रौद्योगिकी इंजीनियरिंग विभाग और इलैक्ट्रिकल, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं इन्स्टूमेंटेशन विभाग के मध्य हुआ। इस सहभागिता में अनुप्रयुक्त अनुसंधान और परियोजनाएं शामिल होंगी।

यह समझौता ज्ञापन प्रो प्रकाश गोपालन, निदेशक, टी यू, और डॉ आर पी त्रिपाठी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, इनमास के बीच आदान–प्रदान किया गया। यह समझौता ज्ञापन आपसी हितो के क्षेत्रों में सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाओं को लेकर दोनों स्थानों पर अनुसंधान और प्रशिक्षण की गुणवत्ता बेहतर करने एवं इनमास और टी यू के मध्य संवाद बढाने के उद्देश से किया गया। इसमें दोनों संस्थानों के बीच वैज्ञानिकों/शिक्षकों और दो विद्यार्थियो का आदान–प्रदान होगा। डी आर डी ओ की जीवन विज्ञान प्रयोगशालाओं में कार्य करने वाले कर्मी पी एच डी के लिए टी यू में पंजीकृत हो सकेंगे और इन्हे पी एच डी की डिग्री संयुक्त देखरेख में टी यू द्वारा प्रदान की जाएगी और टी यू में पी एच डी करने वाले विद्यार्थियो अपने अनुसंधान का एक हिस्सा इनमास में कर सकेंगे। यदि आवश्यकता हुई तो इनमास वैज्ञानिक सह–मार्गदर्शक बन सकेंगे। नियमानुसार, टी यू के पी एच डी प्रवेश नियम और पी एच डी उपाधि नियम लागू होगे। पी एच डी किए जाने के लिए डी आर डी ओ के जीवन विज्ञान प्रयोगशालाओं में काम कर रहे कर्मचारियों को पंजीकृत कर सकते हैं, टी यू पर काम कर रहे पी एच डी छात्र इनमास पर उनके काम का एक हिस्सा बाहर ले जाने के लिए सक्षम हो जाएगा। यदि आवश्यक हो एक इनमास वैज्ञानिक एक सह–गाइड हो सकता है। उपनियमों पी एच डी के दाखिले और पुरस्कार शासी टू की लागू होगी।

इस अवसर पर प्रो गोपालन ने कहा कि यह टी यू के लिए एक यादगार अवसर हैं। प्रख्यात अनुसंधान और विकास संगठनो में से एक के साथ समझौता ज्ञापन

प्रोफेसर प्रकाश गोपालन, निदेशक, थापर विश्वविद्यालय (दांये) तथा डॉ आर पी त्रिपाठी, निदेशक, इनमास, दिल्ली समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।

करते हुए डी आर डी ओ और शिक्षा जगत के बीच भागीदारी से हम नये युग की शुरूआत कर रहे हैं। इस समझौता ज्ञापन से स्नातक इंजीनियर एवं व्यवसायिक इंजीनियर के बीच और नवीन प्रौद्योगिकियों के विकास हेतु प्रयोगशाला स्तीय अनुसंधान एवं उद्योग अपेक्षित अनुसंधान के बीच के अन्तर को कम किया जा सकेगा। इस सहभागिता से दोनो सहयोगियो की विशेषज्ञता की कमियों को पूरा किया जा सकेगा।

टी यू के निदेशक ने यह भी कहा कि बे. हतर उत्पादों और सेवाओं के स्वदेशीकरण को बढाने के लिए इंजीनियरो और जैवचिकित्सीय वैज्ञानिकों को साथ–साथ कार्य करना चाहिए। अपने संबोधन में डॉ त्रिपाठी ने कहा कि हम आपसी सहयोग से सहभागिता तक के परिपेक्ष्य बदलाव का नया युग शुरू कर रहे हैं जो दोनों संस्थानों के लिए लाभप्रद होगा। हम टी यू के साथ हमारे संबंधों को महत्व देते हैं और विश्वास करते हैं कि टी यू के साथ हमारे सहयोग से देश में ज्ञान में वृद्धि और किफायती प्रणालियो का न्वोन्मेश होगा और "भारत में बने" उत्पादों की वृद्धि होगी। उन्होंने आगे कहा कि हमारे संयुक्त सहयोग से विशेष रूप से भारतीय सशस्त्र बलों को मदद मिलेगी और समाज को लाभ होगा। यह समझौता ज्ञापन शुरूआत में पांच वर्ष के लिए होगा और इसे आपसी सहमति से इसका नवीनीकरण किया जा सकता हैं। डॉ राजीव विज, प्रमुख (मानव संसाधन विकास, पुस्तकालय, बीएफए और पी आर ओ), इनमास ने समझौता ज्ञापन का समन्वयन किया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

विश्लेषण विंग का उद्घाटन

डॉ के डी नायक, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक, माइक्रोइलैक्ट्रॉनिक उपकरण एवं संगणनात्मक प्रणाली (एम ई डी और सी ओ एस), डी आर डी ओ ने 20 जून 2015 को वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली के विश्लेषण विंग का उद्घाटन किया। यह नवीन छः मंजिला इमारत मुख्य इमारत और संचार विंग की परिपूरक होगी। इसमें अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक्स, कम्पयूटर, गणित और सांख्यिकी विश्लेषण प्रयोगशाला होगी। इसमें अत्याधुनिक सम्मेलन सुविधा भी होगी। इस अवसर पर डॉ जी अतिथन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एस ए जी और डा पीके सक्सेना, पूर्व निदेशक, एस ए जी मौजूद थे।

डॉ के डी नायक, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक, माइक्रोइलैक्ट्रॉनिक उपकरण एवं संगणनात्मक प्रणाली (एम ई डी और सी ओ एस), एस ए जी के विश्लेषण विंग का उद्घाटन करते हुए।

मनोवैज्ञानिक अनुवीक्षण परीक्षण का विकास

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली ने भारतीय–तिब्बत सीमा पुलिस बल (आई टी बी पी) में इसके कर्मियो जो कि राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड जैसी महत्वपूर्ण कंमाडो बल में शामिल होना चाहते हैं में कमाडों जैसे गुणों को आकलन करने के लिए मनोवैज्ञानिक अनुवीक्षण परीक्षण का विकास किया। परियोजना निदेशक, डॉ उपदेश कुमार, वैज्ञानिक एफ और मुख्य अन्वेषक डॉ विजय प्रकाश, वैज्ञानिक सी के नेतृत्व में डी आई पी आर वैज्ञानिकों का एक दल ने कम से कम समय में इस परीक्षण का विकास किया। यह परीक्षण कमांडों के कर्तव्यों को निष्पादन करने के लिए अनिवार्य रूप से एक व्यापक व्यक्तित्व प्रोफाइल प्रदान करता है। इन अपेक्षित गुणों को एन एस जी कमांडों के पूरे काम के विश्लेषण के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस परीक्षण में उच्च विश्वसनीयता और कसौटी वैधता के मामले में कठोर मनोमितीय गुण है। डॉ के रामचंद्रन, निदेशक, डी आई पी आर ने 12 मई 2015 को श्री एस के शर्मा, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण), आई टी बी पी को यह परीक्षण सौंपा। आई टी बी पी ने आई टी बी पी कर्मियों जो भविष्य में एन एस जी में शामिल होना चाहते हैं के लिए इस पूर्व–अनुवीक्षण परीश्रण को शामिल किया।

डॉ के रामचंद्रन, निदेशक, डी आई पी आर (दांये से दूसरे), श्री एस के शर्मा, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण), आई टी बी पी को मनोवैज्ञानिक अनुवीक्षण परीक्षण सौंपते हुए।

उत्कृष्ट समीक्षक पुरस्कार

डॉ सनिल कुमार के वी, वैज्ञानिक एफ, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि एल्सेविअर द्वारा प्रकाशित समुद्र विज्ञान में एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल के गहन समुद्री अनुसंधान भाग–द्वितीय– समुद्री विज्ञान में ट्रोपीकल अध्ययन की समीक्षा में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया गया।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद ने 02–04 मार्च 2015 के दौरान सुरक्षा जागरूकता अभियान सप्ताह का आयोजन किया। इस अवसर पर, सभी कर्मचारियों को सुरक्षा चिन्ह और डी एम आर एल के सभी समूहों को प्राथमिक चिकित्सा पोस्टर वितरित किए गए। सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे प्रस्ताव लिखना, प्रश्नोत्तरी और पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित किए गए जिसमें सभी कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। प्रशिक्षित सुरक्षा अधिकारियों द्वारा कर्मचारियों के फायदे और जागरूकता के लिए अग्नि, विद्युत, रसायनों, विस्फोटकों और औद्योगिक सुरक्षा पर पाँच व्याख्यान दिए गए। श्री आर गुरूप्रसाद, वैज्ञानिक एफ द्वारा सुरक्षा पर एक खुली मंच प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया और पुरस्कार प्रदान किए गए।

04 मार्च 2015 को 44वां वार्षिक सुरक्षा दिवस मनाया गया। डॉ एस वी कामत, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री एम ए एच बेग, वैज्ञानिक जी, अध्यक्ष, सुरक्षा समिति ने स्वागत संबोधन दिया और पिछले एक साल के दौरान उठाए गए सुरक्षा सम्बन्धी उपायों को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया। श्री बी नरहरि, अध्यक्ष, राष्ट्रीय डी ई एफ मैटलैब कर्मचारी संघ और श्री बी माला रेड्डी, उपाध्यक्ष, निर्माण समिति ने जनसमूह को सम्बोधित किया। डॉ कामत और श्री बेग ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर श्री वी राजकुमार, वैज्ञानिक, अभियांत्रिकी सुरक्षा विभाग, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद के द्वारा कार्यस्थल पर जोखिम मूल्याकंन पद्धतियाँ पर एक लोकप्रिय व्याख्यान का आयोजन किया गया। श्री उमा शंकर, सी ई ओ, सोरिग मैडिका, हैदराबाद द्वारा 10 मार्च 2015 को प्राथमिक चिकित्सा जिसमें प्राथमिक चिकित्सा की मूल तकनीक, कार्डियो पल्मोनरी रेसूसाइटेशन (सी पी आर), जख्म और खून बहना, गंभीर चोटों को संभालना और सांप/जानवर के काटने पर पर एक प्रशिक्षण–एवं–प्रदर्शनी का संचालन किया गया।

डॉ अमोल ए गोखले, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एम आर एल ने अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ इस कार्यक्रम को उत्साह से भाग लिया।

डॉ एस वी कामत, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सुरक्षा दिवस समारोह के अवसर पर दर्शकों को संबोधित करते हुए।

एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर), चांदीपुर

एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर), चांदीपुर ने 14–20 अप्रैल 2015 के दौरान राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह मनाया। श्री एम वी भास्कराचार्य, कार्यकारी निदेशक, आई टी आर ने समारोह का उद्घाटन किया और कार्यस्थल एवं घर पर अग्नि सुरक्षा जागरूकता की आवश्यकता पर बल दिया। श्री आर के बेहरा, अध्यक्ष, सुरक्षा और पर्यावरण समिति, आई टी आर, ने रेंज तकनीकी क्षेत्र और लॉन्च परिसरों में अग्नि से सुरक्षा के उपायों के उन्नयन पर प्रकाश डाला। श्री पी सी राऊटरे, अध्यक्ष, रेंज सुरक्षा परिषद, आई टी आर ने आपातकालीन तैयारियों और मिशन और लॉन्च अभियान के समय के दौरान किसी भी आपातकालीन स्थिति में अग्नि सुरक्षा समूह की प्रतिक्रिया पर प्रकाश डाला। इस सप्ताह के दौरान कर्मचारियों को प्राथमिक चिकित्सा और अग्निशमन उपकरणों का प्रशिक्षण आई टी आर के सभी कार्यकेन्द्रों और एल सी–चतुर्थ, धामरा में दिया गया। अग्नि सुरक्षा संस्थान, कटक के प्रोफेसर एस के पति द्वारा रक्षा संगठन में अग्नि सुरक्षा प्रबन्धन पर एक व्याख्यान सत्र आयोजित किया गया। श्री पी के नायक, प्रभारी अधिकारी, अग्नि सुरक्षा पर कार्यक्रम समन्वयक थे। डॉ एस के साहू ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरू

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरू ने 14 अप्रैल 2015 को बाबा साहेब डॉ बी आर अम्बेडकर की 124वीं जंयती मनाई। श्री फिलिफ अब्राहम, वैज्ञानिक एफ के स्वागत भाषण से इस कार्यक्रम की शुरूआत हुई। श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, केयर ने भी समूह को संबोधित किया। इसके बाद भारतीय संविधान पर एक वृतचित्र प्रस्तुत किया गया।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद

डॉ अमोल ए गोखले (बाएं), निदेशक, डी एम आर एल अम्बेडकर जयंती के अवसर पर श्री सतीश चंदर, निदेशक, ए पी पत्रकारिता महाविद्यालय, हैदराबाद को स्मृति स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद ने 22 अप्रैल 2015 को तमांकर सभागार में बाबा साहेब डॉ बी आर अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम की जयंती मनाई। डॉ अमोल ए गोखले, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एम आर एल मुख्य अतिथि जबकि ए पी पत्रकारिता महाविद्यालय, हैदराबाद के निदेशक, श्री सतीश चंदर, सम्मानित अतिथि थे। 13 वर्षीय एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली युवा लडकी एम पूर्णा और उसके साथी 17 वर्षीय आनन्द कुमार इस अवसर पर विशेष अतिथि थे। श्री एम सत्यनारायणन, अध्यक्ष और श्री जे अनिल कुमार, डी एम आर एल एस सी/एस टी कर्मचारी कल्याण संघ के महासचिव ने उपस्थित समूह का स्वागत किया।

डॉ जी अप्पा राव, वैज्ञानिक जी, संपर्क अधिकारी, डी एम आर एल ने डॉ बी आर अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम के समाज में असमानता को दूर करके राष्ट्रीय अखंडता और समृद्धि के लिए किए गए अथक प्रयासों पर प्रकाश डाला। मिस पूर्णा और मास्टर आनंद कुमार ने माउंट एवरेस्ट की चढाई के दौरान के अपने अनुभवों को साझा किया और जीवन में लक्ष्यित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मानसिक साहस और समर्पित प्रयासों के महत्व का वर्णन किया। डॉ अमोल गोखले ने अपने संबोधन में डॉ बी आर अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम के जीवन के विभिन्न पहलुओं उनकी शिक्षा, राजनीतिक जीवन और समाज के लिए उनके सामाजिक योगदान को बताया। श्री सतीश चंदर ने भारत के लोगों की सामाजिक और आर्थिक हालत की बेहतरी की दिशा में डॉ अंबेडकर और बाबू जगजीवन राम की विचारधाराओं पर अपने विचार प्रकट किए।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू ने 17 अप्रैल 2015 को डॉ बी आर अम्बेडकर की 124वीं जंयती आनन्दप्रद तरीके से मनाई। डॉ सी पी रामनारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, जी टी आर ई ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री डी थंगाराज, आई ए एस (सेवानिवृत्त) इस अवसर पर मुख्यातिथी थे और ड़ॉ राजू, आई एफ एस, प्रबन्ध निदेशक, कर्नाटक हथकरघा विकास निगम विशेष अतिथी थे। श्री डी थंगाराज और डॉ डी राजू ने अपने संबोधन में कहा–किस प्रकार बाबा साहब अम्बेडकर के कदमों ने देश की सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों को प्रभावित किया।

बाँए से दाँए–श्री डी थंगाराज, आई ए एस (सेवानिवृत्त), डॉ सी पी रामनारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एव निदेशक, जी टी आर ई, तथा डॉ डी राजू, प्रबन्ध निदेशक, कर्नाटक हैण्डलूम, जी टी आर ई में अम्बेडकर जंयती के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू

ए डी ई, बैंगलूरू द्वारा आयोजित डॉ बी आर अम्बेडकर जयंती समारोह।

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरू अनुसूचित जाति/जनजाति कर्मचारी कल्याण संघ नें 14 मई 2015 को डॉ बी आर अम्बेडकर की 124वीं जयंती मनाई। श्री पी श्रीकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए डी ई ने समारोह की अध्यक्षता की और डॉ अम्बेडकर के जीवन और संघर्षों पर प्रकाश डाला। न्यायमूर्ति एच एन नागामोहन दास, पूर्व न्यायमूर्ति, कर्नाटक उच्च न्यायालय इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। उन्होंने लोकतंत्र, दलित अधिकार, महिला सशक्तीकरण और सामाजिक न्याय पर व्याख्यान दिया। श्री ईश्वर, अध्यक्ष, कर्नाटक वन उद्योग निगम इस अवसर पर विशेष अतिथि थे। श्री एच वी विरेन्द्र सिम्हा, पूर्व मुख्य जेल निरीक्षक को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। इस अवसर की याद में आर्थिक रूप से कमजोर वर्गो के लिए पुस्तकें, स्कूल बैग, छात्रवृत्ति वितरण आदि विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गई थी।

कार्मिक समाचार

उच्च अर्हता प्राप्ति

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू

श्री धरूबा बिस्वास, वैज्ञानिक एफ, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू को आई आई टी, खडगपुर द्वारा उनके शोध शीर्षक अक्टिव कंट्रोल आफ जियोमैट्रिकली नानलिनयर वाइब्रेशन आफ रोटेटिंग कंपाजिट, सैडविच एण्ड फयूजि फाईबर–रेनफार्सड सैडविच बीम यूजिंग डिफरेट पियजोइलैक्ट्रिक कमपोजिट के लिए पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम

श्री एस राजा, वैज्ञानिक जी ने आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम से उनके शोध शीर्षक ए फ्रेमवर्क फार फाईंडिग ओनटोलोजी–बेसड सिमेटिक सिमिलिरटी मयर्स के लिए कम्पयूटर विज्ञान और प्रणाली इंजीनियरंग में पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

श्री अब्राहिम वर्गिश, वैज्ञानिक जी ने आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम से उनके शोध शीर्षक अंतर्जलीय सेन्सर नेटवर्क नोड के विकास और नेटवर्क प्रोटोकाल के बनाने के लिए कम्पयूटर विज्ञान और प्रणाली इंजीनियरंग में पी एच डी प्राप्त की।

श्री वी वी एस भास्कर राजू, वैज्ञानिक एफ, ने आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम से उनके शोध शीर्षक कन्सट्रेड परत डंपिग अनुप्रयोगां के लिए एथेलेन प्रोपेलेन डिआन मोनोमर सामग्री के विकास और चरित्रण के लिए यांत्रिक इंजीनियरिंग में पी एच डी प्राप्त की।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सम्मेलन/सेमिनार/विचार-गोष्ठी/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/बैठकें

खाद्य संरक्षा और सुरक्षा पर कार्यशाला

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह द्वारा 25 अप्रैल 2015 को खाद्य संरक्षा एवं सुरक्षा पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य खाद्य संरक्षा और सुरक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न अधिनियमों एवं दिशा निर्देशों और भारत खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ एस एस ए आई) से प्रमाण–पत्र प्राप्त करने के लिए आवश्यक विभिन्न दस्तावेजों पर पर चर्चा करना था।

डिहार में आयोजित खाद्य संरक्षा और सुरक्षा पर कार्यशाला में चर्चा के दौरान प्रतिभागीगण।

डॉ भुवनेश कुमार, निदेशक, डिहार ने अपने स्वागत संबोधन में उद्योगों द्वारा खाद्य प्रमाणन और उत्पादन के सम्बन्ध में खाद्य संरक्षा और सुरक्षा से जुड़ी उलझनों पर प्रकाश डाला। उन्होनें मानव उपभोग के लिए हर्बल प्रकृतियों और इनसे युक्त खाद्य के प्रमाणन को प्राप्त करने के लिए विभिन्न दिशानिर्देशों, अधिनियमों, प्रक्रियाओं की महत्वता को बताया। उन्होंने बल दिया कि प्रयोगो और प्रलेखनों को इस प्रकार डिजाइन करना चाहिए जिससे डिहार द्वारा विकसित हर्बल प्रकृतियों को प्रमाणन प्राप्त हो सके। (एफ एस एस ए आई) से विशेषज्ञ, डॉ मिनाक्षी सिंह ने विभिन्न खाद्य, तेल, प्रकृतियों, हर्बल निरूपित, मलहम, पेय पदार्थों इत्यादि के खाद्य संरक्षा और सुरक्षा से सम्बन्धित विभिन्न अधिनियमों और दिशानिर्देशों पर चर्चा की। इन्हांने गुणवत्ता नियंत्रण, प्रमाणन और उत्पादन को विनियमित करने वाले विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय निकायों और अधिनियमों के बारे में बताया।

सेवानिवृति योजना पर कार्यशाला

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद ने कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेप्टेम) की ओर से 20–22 मई 2015 के दौरान सेवानिवृत्ति योजना पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला डीएमआरएल के अगले वर्ष सेवानिवृत होने वाले कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला का लक्ष्य इस कर्मचारियों को सेवानिवृति के बाद के जीवन के बारे में शिक्षित करना था।

डॉ अमोल ए गोखले, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एम आर एल और श्री सुधीर गुप्ता, निदेशक, सेप्टम ने प्रतिभागियो को संबोधित किया और सेवानिवृति से सम्बन्धित उनके संदेहो को स्पष्ट करने को कहा।

प्रतिभागियों और सेवानिवृत्ति लाभ पर अपने सभी संदेहों को स्पष्ट करने को कहा। विशेषज्ञ द्वारा रिटायरमेंट के बाद जीवन, वित्तीय नियोजन, स्वास्थ्य देखभाल, पेशन भत्तो, योगा, तनाव प्रबन्धन आदि विषयों पर व्याख्यान प्रदान किए गए। इस कार्यशाला में 50 कर्मचारियों ने भाग लिया। डॉ एस वी कामत, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, डी एम आर एल नें समापन समारोह की अध्यक्षता की।

हिमस्खलन प्रतिक्रिया प्रचार–प्रसार बैठक

सासे में हिमस्खलन प्रतिक्रिया पर आयोजित प्रचार–प्रसार बैठक का दृश्य।

हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे), मनाली ने 22 मई 2015 को आर डी सी, सासे, चण्डीगढ़ में हिमस्लखन प्रतिक्रिया पर 17वीं प्रचार–प्रसार बैठक का आयोजन किया। यह बैठक शीतकाल सत्र के अन्त में एक सालाना संवाद होती हैं जब सैन्य बलों को बर्फयुक्त हिमस्खलन संभावित क्षेत्रों में तैनात किया जाता हैं और सासे द्वारा सेवा प्रदान करने के सम्बन्ध में नोटस का आदान प्रदान किया जाता हैं। 2, 9, 14, 15, 16 सेना कोर, उच्च उच्चांश युद्धकौशल विद्यालय, मुख्यालय यू बी एरिया, आई टी बी पी और सीमा सड़क संगठन

ISSN 0971-4405

के 33 अधिकारी इस बैठक में शामिल हुए। दिन भर चली बैठक के दौरान, हिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्रों में सैनिकों को पेश आ रही समस्याओं के साथ–साथ इनके समाधान पर चर्चा की गई। विचार विमर्श के चर्चा के बाद ए श्री अश्वाघोण गंजू, निदेशक, सासे ने उन मुख्य बिन्दुओं को बताया जिन पर सासे द्वारा कार्य करना था ताकि सैन्य बलों द्वारा हिमस्खलन संभावित क्षेत्रों में पेश आने वाली समस्याओं को दूर किया जा सके।

पुरस्कार

जैवप्रौद्योगिकी उत्पाद और प्रक्रिया विकास और वाणिज्यीकरण पुरस्कार 2015

जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डी बी टी), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने जैव प्रौद्योगिकी उत्पाद और प्रक्रिया विकास और वाणिज्यीकरण पुरस्कार 2015 को डॉ मनमोहन परिदा और उनके दल जिसमें डॉ पी के दास, डॉ जे एस कुमार, डॉ एस शर्मा और श्री अंबुज शामिल थे, को दिया गया। ये सभी रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डी आर डी ई) ग्वालियर से संबद्ध हैं। इनको यह पुरस्कार जल्द पुष्टि रोग की पहचान और महामारी स्वाइन फ्लू H1 N1 वायरस की निगरानी के लिए तेज और किफायती स्वाइन फ्लू आर टी–एल ए एम पी स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया। डॉ हर्षवर्धन, केन्द्रीय मंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं पृथ्वी विज्ञान, भारत सरकार नें यह पुरस्कार 11 मई 2015 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2015 समारोह के दौरान विज्ञान भवन में डॉ मनमोहन परिदा और उनके दल को दिया। इस पुरस्कार में एक स्मृति चिन्ह, एक प्रमाण–पत्र और दो लाख रूपये का नकद पुरस्कार था।

डॉ हर्षवर्धन (दांये से चौथे), डी आर डी ई वैज्ञानिकों को जैवप्रौद्योगिकी उत्पाद और प्रक्रिया विकास और वाणिज्यीकरण पुरस्कार 2015 प्रदान करते हुए।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह

03 मई 2015 : श्री आर के माथुर, रक्षा सचिव, भारत सरकार। आपको डिहार द्वारा किए जा रहे कार्यकलापों की जानकारी दी गई। आपने डिहार द्वारा लद्दाख क्षेत्र में तैनात सैन्य बलों तथा स्थानीय किसानों के लाभ के लिए चलाई जा रही परियोजनाओं की प्रशंसा की।

11–13 मई 2015 : डॉ मानस के मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक, जीव विज्ञान, डी आर डी ओ। डॉ भुवनेश कुमार, निदेशक, डिहार ने सैनिकों की ताजा भोजन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिहार द्वारा चलाई जा रही अनुसंधान तथा विकास गतिविधियों के बारे में बताया।

श्री आर के माथुर, रक्षा सचिव, भारत सरकार (बांये से दूसरे) को डिहार द्वारा उगाई जा रही सब्जियों के बारे में बताया जा रहा है।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

मुख्य सम्पादक	सह मुख्य सम्पादक	सम्पादक	सहायक सम्पादक	सम्पादकीय सहायक	मुद्रण	विपणन
गोपाल भूषण	सुमति शर्मा	फूलदीप कुमार	अनिल कुमार शर्मा अशोक कुमार	दिनेश कुमार	एस के गुप्ता हंस कुमार	आर पी सिंह

श्री गोपाल भूषण, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23813465 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in